राज कॉमिक्स

संख्या 305

नागराज

brought 2 u by:

Rachit Sharma

Mayuresh Athiya

फिर एक बार ध्रुव और नागराज एक साथ

पढ़िये नागराज और ध्रुव का नया सनसनीखेज कामिक्स विशेषांक

नागराज और बुगाकू

इस कॉमिक्स विशेषांक के साथ सुपर कमांडो ध्रुव का मैग्नेट स्टीकर मुफ्त

इसी सैट के कॉमिक्स

- नगीना का जाल (नागराज का विशेषांक)
- काले (भोकाल सीरीज)
- आतंक (थ्रिल हॉरर सस्पैंस)
- बाकेलाल देवलोक में
- जंतर-मंतर छू
- शाप का अन्त
- राजा और बैंक लुटेरे
- राजा और काला हीरा

आगामी सैट के कॉमिक्स

- आवाज की तबाही (विशेषांक)

इस कॉमिक्स के साथ सुपर कमांडो ध्रुव का एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

- शुतान (भोकाल)
- इस कॉमिक्स के साथ शुतान का
- [illegible]
- डायन (थ्रिल हॉरर सस्पैंस)
- तिलिस्मदेव और तिलिस्मासुर
- चन्द्रकला
- राजा और मौत बेचने वाले
- हवलदार दामू

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110009

भोssकाssल

लेखक: संजय गुप्ता चित्रांकन: कदम स्टुडिओ सम्पादन: मनीष चंद्र गुप्त

आपका प्रिय पात्र भोकाला कौन है यह? क्या है इसकी पिछली जिन्दगी? कैसे बन जाता है यह अलोक से भोकाल अन्दर के पृष्ठों में आपके इन सब सवालों का जवाब है—एक हैरत अंगेज चित्रकथा के रूप में।

© RAJA POCKET BOOKS

परीलोक प्रसिद्ध है कि स्वर्ग समान होता है, किन्तु आज वहां नरक से भी भयंकर नजारा दिखाई पड़ रहा था –

आह! बचो भागो!

राक्षस आ गए!

राक्षसराज बोझ और भरकम ने अपनी सेना सहित परीलोक पर धावा बोल दिया था –

हा हा हा परीलोक की कोई परी नहीं बचनी चाहिए सभी परियों को अपने साथ ले चलो!

ये परियां खाने में अति स्वादिष्ट होती हैं! हा हा हा!

परीलोक का राजा स्वजानदेव !

परीलोक में किसी ने आज तक हथियार नहीं उठाए, इसीलिए तुमने इतनी तबाही मचा दी, किन्तु शैतानो...

...अगर महागुरु भोकाल को इस तबाही की खबर मिल गई तो तुम सबकी खैर नहीं

ठठाकर हंस पड़े शैतान राक्षस, और –

हा हा हा बहुत बोल चुका। अब इसकी बोलती बंद कर दी जाए!

खच्च

नहीं ईईई ऽऽऽ

2

नन्हें युवराज का हृदय चीत्कार कर उठा –

पिताश्री ईईई ऽऽऽ

पिताश्री ऽऽ आप हमें छोड़कर नहीं जा सकते। इस तरह नाराज न होइए पिताश्री। उठिए। देखिए आपके श्वेत वस्त्र लाल होते जा रहे हैं। इन्हें साफ कीजिए।

पुत्र आलोप सुनो...

मुश्किल से बोल पा रहे थे राजा स्वजानदेव

और आलोप को तो पता भी ना चला कि कब उसके पिताश्री उसे अकेला छोड़ चले –

मैं कसम खाता हूं पिताश्री! ऐसा ही होगा, किन्तु पहले आप राज-वैद्य जी के घर चलें। नहीं तो, पिताश्री!

पाताल लो उठा बालक क्रोध से दरिन्दों की हंसी सुनकर...

मेरे पिताश्री नहीं तुम शैतान राक्षस, वह नहीं मरे!

मोकाल

... पुत्र हमारे बाद तुम्हें इन राक्षसों से परीलोक की तबाही का बदला लेना है। मिटा देना इन शैतानों को। दिखा देना कि शराफत और सच्चाई की तलवार कितनी मजबूत होती है। ऐसे हर शैतान को तुम्हें सिर्फ मौत देनी है पुत्र, सिर्फ मौत!

तभी यह तमाशा देखकर आनंदित होता राक्षसराज भरकम बोला –

हा हा हा मेरा काम खत्म करेगा! अब वह मर चुका है। वह कहीं नहीं चलेगा तेरे साथ। हा हा हा

नहीं ईईई ऽऽऽ

किन्तु था तो बच्चा ही –

हा हा हा बाप के उपदेशों ने बच्चे को बरबाद किया!

छोड़ दे मुझे नीच, छोड़ दे, मैं तुझे जान से मार दूंगा!

3

अंधेरी हंसी हंसते दोनों और-
हाहाहा छोड़ देते हैं वे बच्चे छोड़ दिया।
आह ऽ ऽऽऽ
हाहाहा अब नहीं बचेगा यह।
राक्षसराज जोझ! सभी परियां कैद की जा चुकी हैं। आज्ञा हो तो कुच करें।
चलो!
बच्चे को मरा जानकर...
... दोनों चल पड़े।
हा हाहा चलो आज जरूर होगा। कुच करो।
हाहाहा
किन्तु...
जिस दीपक को स्वयं ऊपर वाले ने रौशन किया हो...
आह!
...वह ऐसे नहीं बुझा करता।
फिर परलोक का कोना-कोना उसके करुण स्वर से रो पड़ा-
पिताश्री ऽऽ ऊऊऽऊ
उसके नन्हें दिल में बदले की चिंगारियां सुलग उठीं-
बदला!

मां
अनाथ बच्चा सुबह भटका।
माताश्री!
किन्तु ऐसा लगता था कि जैसे परलोक में ऐसा कोई बचा ही नहीं था जो उसकी पुकार सुनता।
माताश्री! क्या आप भी हमें छोड़कर चली गईं।
माताश्री! कहां हो तुम?
कितनी ही देर तक रोता रहा वह।
किसी की बहुत ही हल्की आवाज ने उसकी सिसकियों का क्रम तोड़ा-
आलोप पुत्र! अंदर आओ!
पुत्र अलोप! अंदर आओ।
कौन है ये? कौन पुकार रहा है मुझे?

तभी उसे एक और आश्चर्यजनक दृश्य देखने को मिला –

उफ! महागुरु भोकाल इस अवस्था में।

पुत्र! मेरे करीब आओ।

वह आगे बढ़ा –

यह क्या हुआ महागुरु, वे राक्षस मेरे पिताश्री, माताश्री सबको मार गए।

हां पुत्र! वे मुझे भी लंगड़ा कर मरने के लिए छोड़ गए।...

... मैं उस समय समाधि में बैठा था जब उन्होंने मुझ पर धोखे से वार किया और मैं इस स्थिति में आ गया कि चाहकर भी परीलोक को न बचा सका

हां पुत्र! सैकड़ों परियों के साथ वे तुम्हारी मां परीरानी ओसिका को भी पृथ्वीलोक ले गए।

पृथ्वीलोक! मुझे बताइये महागुरु कहां है यह लोक। मैं वहां भी ऐसी तबाही मचा दूंगा जैसी उन दरिंदों ने परीलोक में मचाई है।

पृथ्वीलोक बहुत बड़ा है पुत्र और वहां काबुर प्राणी इन राक्षसों जैसा नहीं है। वहां जाकर तुम्हें उन्हें खोजना पड़ेगा।

मैं खोजूंगा महागुरु! आप बताइए वहां पहुंचा कैसे जाएगा?

पुत्र! वह पत्थर हटाओ।

अभी लीजिए महागुरु!

आलोप उस पत्थर पर झुका और –

हम्फ बहुत भारी है।

इतना वजनी पत्थर तो कोई बड़ा ताकतवर ही उठा सकता था।

किन्तु बच्चे में जबरदस्त इच्छाशक्ति थी –

पुत्र और प्रयत्न करो तुम्हें बदला लेना है, बदला।

मैं इसे उठाकर रहूंगा हम्फ-हम्फ

किन्तु वह उसे हिला भी ना सका।

महागुरु भोकाल के होंठों पर बिखर उठी मुस्कान। एक घायल मुस्कान –

पुत्र! मेरा नाम पुकारो।

लाल-लाल आंखों से क्रोधाग्नि बरस पड़ी –

बदला! मुझे बदला लेना है महागुरु! उनसे अपने माता-पिता की हत्या का।

हां पुत्र! बदला भी लेना है और अपनी मां को भी खोजना है तुम्हें।

तो क्या माताश्री को वे जल्लाद उठाकर ले गए?

भोSSकालSSले

अचानक हो उठता है-

अद्भुत परिवर्तन हुआ उसके स्वरूप में-

और-

वह आलोप से भोकाल बन गया।

अजीब नजर आया-

बुधारी तलवार और ढाल!

तभी महागुरु भोकाल की आवाज वहां गूंजी-

पुत्र! इन्हें मेरे पास लेकर आओ।

आलोप के हाथ तलवार पर जम गए-

परीलोक में प्रथम बार किसी ने हथियार पकड़ा होगा।

भोकाल

और अगले ही क्षण तलवार व ढाल आलोप के हाथों में थे-

किन्तु मुझे तलवार चलाना कौन सिखाएगा?

वह आगे बढ़ा।

पुत्र! यह तलवार मुझे दो।

लीजिए महागुरु!

महागुरु भोकाल ने तलवार का रुख आलोप की तरफ किया

अपनी सीधी बांह आगे करो पुत्र!

जो आज्ञा महागुरु!

तलवार में से चिंगारियां निकलीं और-

भोकाल की कलाई में हमेशा-हमेशा के लिए वह निशान छप गया।

पुत्र, अब जब भी तुम मेरा नाम पुकारोगे, यह तलवार, ढाल चमचमा उठेंगे और यह शक्तिवान स्वरूप तुम्हें मिल जाएगा। पुत्र आलोप! इस अजेय तलवार का धारक सुदृढ़ व सुदृढ़ तलवार का संचालन जानता है।

फिर महागुरु भोकाल आलोप को उस अजेय तलवार के बारे में सब कुछ बताते चले गए।

अंतत:

पुत्र! अब तुम नेत्र बन्द करो और जब तुम नेत्र खोलोगे सुबह को पृथ्वी पर पाओगे।

किन्तु आप महागुरु!

मेरी फिक्र तुम ना करो। मेरा समय पूरा हो चुका है और जब तुम मुझे पुकारोगे तब मेरी ही आत्मा तुममें आएगी।

और आज से तुम्हारा नाम होगा भोकाल।

महागुरु!

महागुरु के स्वर में गहरी पीड़ा उभर आई-

नेत्रबंद करो पुत्र! शीघ्र मेरा समय पूरा हो चुका है।

बालक ने जल्दी से अपने नेत्र बंद कर लिए।

और जब उसने अपनी आंखें खोलीं-

पृथ्वी!

वह अनाथ बालक कितनी बड़ी दुनिया में आ गया था।

कहां ढूंढ़ूं मैं अपनी माता श्री को। उनके हत्यारों को। हे महागुरु भोकाल मेरी मदद करो।

सामने नजर आई एक कुटिया -

यह किसकी कुटिया है?

वह तेज कदमों से कुटिया की तरफ चल पड़ा।

यह था महर्षि गाजोबाजो का आश्रम।

प्रणाम महर्षि।

आओ वत्स! कहो कौन हो? हमसे क्या चाहते हो?

महर्षि गाजोबाजो के बारे में जानने के लिए पढ़ें 'भोकाल' सीरीज के पूर्व कॉमिक्स 'खौफनाक सेल' और 'तिलिस्मी ओलम्पाक'

सुकुमार भोकाल ने महर्षि गाजोबाजो की खूब सेवा की-

रात्रि के अंतिम प्रहर में महर्षि गाजोबाजो ने भोकाल को जगाया।

भोकाल

भोकाल जब गाजोबाजो की अपनी पूरी ज्ञानधारा सुना चुका तब -

वत्स! हमें तुमसे पूरी हमदर्दी है। हम चाहेंगे तुम यहीं रहो। तुम राक्षस बोझ और भस्मकर्ण को खोजने में भी तुम्हारी मदद जरूर करेंगे।

धन्यवाद महर्षि!

महर्षि गाजोबाजो ने भी उसे पुत्र समान स्नेह किया।

भोकाल! तुमने मेरा पुत्र समान ही सेवा की है। तुम्हें इसका फल जरूर मिलेगा।

समय के साथ-साथ भोकाल हो रहा था जवान।

एक दिन जब महर्षि गाजोबाजो समाधि से उठे वे अत्यंत प्रसन्न थे-

पुत्र भोकाल। हमें तुम्हारे लोक में तबाही मचाने वाले राक्षसों का पता चल गया है।

सच महर्षि! सच!

खुशी भोकाल से भी संभाले नहीं संभल रही थी।

महर्षि! अल्दी बताइये कहां हैं वे। मेरी भुजाएं फड़क रही हैं उनसे बदला लेने के लिए।

वे पड़ोसी राज्य कोहरामपुर में आए हुए हैं तबाही मचाने।

इसी दिन के इंतजार में पृथ्वी पर इस वर्ष से गुलजार रहा था वह और अब वह और नहीं रुक सकता था।

लोहरा जंगल में आज वास्तविक कोहराम मचा हुआ था—

कितनी भी सुन्दर युवतियां हैं सब इकट्ठी करलो।

वाह! इनका नरम-नरम मांस खाकर मजा आ जाएगा।

बचाओ ऽऽ बचाओ ऽऽ

तभी उन राक्षसों के सामने आ खड़ा हुआ भोकाल—

ठहरो! अधर्मियो बस, अब और तबाही नहीं मचा सकते तुम।

हा हा हा हा हो हो

और दुष्ट राक्षसों ने भोकाल को उछाल फेंका—

हो हो हो मच्छर हमें ललकार रहा है।

वह क्रोध में फुंफकार उठा—

भो ऽ का ऽ ल ऽ

शामत आ गई राक्षसों की—

यह महाबुरु भोकाल की टांगें काटने के बदले।

आऽऽआऽऽ

गिन-गिनकर बदले ले रहा था भोकाल—

यह महाबुरु भोकाल की हत्या के बदले।

हा आयऽऽ

अपनी जिंदगी का सबसे कंपा देने वाला दृश्य था राक्षसों के सामने।

परलोक में मचाई तबाही का बदला आज पूरा होगा।

आओ सब मिलकर इसकी हत्या करदें

भोकाल ने राक्षसों के बीच तबाही मचा दी। वह अकेला उन राक्षसों के साथ खेल रहा था—मौत का खेल।

मुझे अनाथ बनाने के लिए।

बदला!

बदला!

राक्षस त्राहि-त्राहि कर उठे।

जंगली जिंदगी की पहली लड़ाई जीत गया था भोकाल।

बोल! जुबान खोल! बता कहां है परीरानी ओसिका! मेरी मां! कहां छुपा रखा है उन्हें तूमने जवाब दे!

अच्छे अच्छों की जुबान खुल जाती है मौत के सामने!

वह...वह राक्षसराज बोझ और भरकम की कैद में है।

बोझ और भरकम कहां है यह दोनों! बोल कहां है वह दोनों?

कोहरामपुर वासियों ने उसे कंधों पर उठा लिया—

हमारा रक्षक जिंदाबाद!

अरे! अरे!

भोकाल जिंदाबाद!

वे दोनों ओसाक ग्रह के देवता महान सजुरा के आदेश पर तभी से तिलिस्मी ओलम्पाक नामक जगह पर पहरेदारी के लिए नियुक्त हैं। जब वे परीलोक से वापस लौटे थे।

तिलिस्मी ओलम्पाक! यह कहां हुआ?

किन्तु भोकाल के दिमाग में अभी भी उठ रहा था भयानक तूफान-

मैं अभी भी वहीं का वहीं हूं। अब राक्षसराज बोझ और भरकम तक पहुंचने के लिए ढूंढना पड़ेगा तिलिस्मी ओलम्पाक को।

महर्षि गाजोबानो को जरूर तिलिस्मी ओलम्पाक के बारे में मालूम होगा।

फंसकर रह गया फिर से बेचारा भोकाल राक्षस का जवाब सुनकर।

यह किसी को नहीं मालूम वह अत्यंत गुप्त जगह है और कैसी दूसरे लोक में है।

तो तेरा काम तो खत्म हुआ तू तो...

...मर!

धक्के

आह sss

अंतिम बलि चढ़ाकर भोकाल पलटा।

तभी वहां गूंज उठी एक मुनादी—

सुनो! सुनो! सुनो!

कोहरामपुर वासियों को विकासनगर के राजा विकास मोहन का निमंत्रण जो भी महाबली, महावीर, सर्वोत्तम पुरुष महाराजा द्वारा आयोजित खौफनाक खेल में भाग लेना चाहे उसका विकास नगर में स्वागत है।...

...सर्वोत्तम महावीर को महाराज विकास मोहन व महाबली फूचांग भेजेंगे तिलिस्मी ओलम्पाक, जिसके तिलिस्म तोड़नेवाले को मिलेगा बहुत बड़ा खजाना।

तुरंत ही एक शब्द भोकाल के जेहन में घुसता चला गया।

विकासनगर! महाराज विकासमोहन! महाबली फुचांग! तिलिस्मी ओलम्पाक!

अब उसके पास रुकने के लिए वक्त नहीं था।

महर्षि गाजोबाजो के आश्रम में पहुंचकर ही सांस ली ठरगो-

महर्षि कहां है आप महर्षि!

किन्तु महर्षि गाजोबाजो उसे कहीं नहीं मिले।

भोकाल ने दो दिन भूखे-प्यासे महर्षि गाजोबाजो की प्रतीक्षा की-

महर्षि बिना बताए कहां चले गए! इस वर्ष में कभी ऐसा नहीं हुआ था।

अंतत: उन्होंने विकासनगर जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

फिर भोकाल विकासनगर की क्रीड़ास्थल पहुंच गया-

विकासनगर के क्रीड़ास्थल में चार विजेता चुने गए, भोकाल शूतान, अतिक्रूर व तुरीन, जिन्हें महाबली फुचांग ने तिलिस्मी ओलम्पाक में भेज दिया-

...तिन्नो, यह थी मेरी कहानी जिसे सुनने के लिए तुम सब बेचैन थे।

भोकाल हम सब तुम्हारी माताश्री को ढूंढने में तुम्हारी मदद करेंगे।

फिर बाद-

भोकाल हमें शीघ्र ही इस रेगिस्तान से निकल लेना चाहिए। मुझे मौसम के आसार कुछ ठीक नहीं दिख रहे।

ठीक कह रहे हो तुम।

केतना रही पूर्वाभास था अतिक्रूर का।

...सिर्फ रेत की ही आवाज सुनाई पड़ती थी और कुछ नहीं।

भोकाल

तेज आंधी ने उन्हें हिलने का मौका भी नहीं दिया।

तुरीन, श्वेत, शूतान कहां हो तुम?

भोकाल... भोकाल चाचा!

इतना रेत उड़ा, इतना रेत उड़ा कि...

रेत ही रेत दिखता था और कुछ नहीं।

सबको अथाह रेत ने निगल लिया।

और जब आंधी थमी।

रेगिस्तान के उस टुकड़े में कई कंकाल दिखाई पड़ रहे थे।

पृथ्वीयर–

यह क्या हुआ कहां गए वह सब?

क्या भोकाल मर गया?

नहीं भोकाल कभी नहीं मर सकता।

यह था कोरीधकेल के राजा कोरिया का राजपरिवार।

विशालगढ़ का राजा विक्रमसिंह–

बांकेलाल! यह क्या हुआ हमारा प्यारा भोकाल कहां खो गया?

मुच्छड़ड़, काश तेरी भी किसी रेगिस्तान में ऐसी ही कब्र बन जाए।

महाराज देखने जाइए भोकाल कब्र फाड़कर भी बाहर आ जाएगा

पृथ्वी के सभी राजा जो इस शानदार खेल का मजा ले रहे थे–

उफ! अब इन्हें यहां से कौन निकालेगा?

भोकाल! भोकाल!

सोयानगर का राजा पायासिंह।

चौटपुर का राजा सूजादेव।

यह तो हमारे भोकाल चीखने से क्या होगा। वह तो भोकाल ही कुछ कर सकता है।

कायरगढ़ का राजा शेरदिल।

और इस खेल का दिमाग, इस जाल की शेड़, इस क्रूरता का आयोजक महाबली फ्रचांग –

वाह, वाह! महान खजूरा ने भी तिलिस्मी ओलम्पाक की रक्षा के लिए क्या शानदार इंतजाम किए हुए हैं। आम आदमी तो क्या जाएगा ये दिव्याज हीलोहे के चने चबाकर आगे बढ़ पा रहे हैं।

तभी–

भोकाल!

एक टीले को चीरता हुआ निकला भोकाल

बाहर निकलते ही उसे दूसरे साथियों की चिंता हुई।

वे जरूर मेरी तरह ऐसे ही किसी टीले में दफन होंगे।

मैं इन टीलों का नामोनिशां मिटा दूंगा।

भोकाल फुर्ती से टीलों की तरफ बढ़ा।

महाशक्तिशाली तलवार लहराई और–

रेत के उस पहाड़नुमा टीले से टक्कर हुई।

टीले का एक-एक कण बिखर गया और रह गया–

अतिक्रूर और राजकुमारी श्वेता।

ऐसे ही दूसरा टीला भी उड़ा दिया गया।

शूताल!

शूताल अब भी बाज नहीं आया–

यार! तुम लोग कहां से आ गए। मैं तो सोच रहा था कि यमराज मिलेगा तो उसे सम्मोहित करूंगा। आओ यार, सब गुड़ गोबर कर दिया।

किंतु भोकाल को तो अभी चैन की तुरंत की ...

...लेकिन सभी तीनों ढूंढने के बाद भी जब...

तुरीन नहीं मिली।
वह कहां चली गई?

बहुत ढूंढने के बाद भी जब वह ना मिली-

उफ! हमने अपने बहुत अच्छे साथी गंवा दिये।

पृथ्वी पर भी तुरीन के कपाल के खोने का गम मनाया जा रहा था-

उफ तुरीन! मैं तो तुम्हारी दिवानी थी।

मौतगढ़ की राजकुमारी चाल्ला।

उफ! राजवैद्य को बुलाओ मुझे दिल का दौरा पड़ा है।

भोपाल का राजा चोपाल।

मेरा क्या होगा! मैं तो कुंवारा रह जाऊंगा! मुझे तो तुरीन से शादी करनी थी।

गढ़ चिरोली खुर्द का राजकुमार मजनू।

हाए तुरीन! तू कहां गई, तेरी याद में दिल रोता है।

बू राजी का राजा बाबूदेव।

वाह! मजा आ गया कितने अच्छे-अच्छे मोड़ आ रहे हैं इस खेल में।

तिहाड़गढ़ का राजा भामोबांदीसिंह।

अरे, अरे! यह क्या? यह कैसे भयानक राक्षस इनकी तरफ बढ़ रहे हैं?

टोलामोला का राजा टुईयादेव।

दो बड़े भयानक राक्षस उनकी तरफ बढ़ रहे थे, लेकिन अरे यह तो वही है-

राक्षसराज बीझ और भरकम।

99

99

भोकाल का जिस्म क्रोध से भर उठा।

भोकाल

याद आ गया उसे अपने पिता की हत्या का खौफनाक मंजर-

फिर वह खुद को नहीं रोक पाया-

मौ$$का$$ल$$

रक्त का बदला रक्त से ही लेना है उसे।

भोकाल राक्षसों का संहार करने के लिए बढ़ा।

दरिन्दो! आज तुम्हारा आखिरी दिन है।

किन्तु-

राक्षसों के हाथ लग गई थी मासूम श्वेता--

हा हा हा

न हींई sss भोकाल चाचा, बचाओ ss

भोकाल से यह निर्ममता नहीं सही गई।

जानवरो।

वार जबरदस्त था।

भोकाल

किन्तु सही वक्त पर रुक गया वरना--

काटो। अरे, रुक क्यों गए? हां हां, काटो।

शक्

बहुत बड़ी हानि होने से बच गई।

उसे छोड़ दे कायर! मुझसे युद्ध कर।

नहीं। पहले खेल खेलेंगे फिर युद्ध करेंगे।

क्रूरता की हद हो गई राक्षस ने उछाल फेंका उस बच्ची को-

लो भरकम, संभालो। लपका-लपकी खेलते हैं।

आ ss आ ss

खूब हंसे दानव उस बेबसी पर आसमान सिर पर उठा लिया उन्होंने, भागते हो गए वे--

हो हा हो हो हो हो हो हा हा

LATEST GIFT-ITEMS GREETING-CARDS TOYS-GAMES NOVELS-MAGAZINES-COMICS S.P. Sales Center-Pandav Nagar-10

भोकाल बहुत मुश्किल से खुद को रोक पा रहा था।

राजकुमारी श्वेता जो फूलों की तरह पली थी।...

...आज किस बेदर्दी से उछाली जा रही थी।

हा हा हा मजा आगया।

वाह, वाह, वाह! क्या शानदार खेल है।

भोकाल राक्षसराज भरकम की तरफ दौड़ा--

अगर यह मजबूरी न होती तो तुम्हें अब तक यमलोक पहुंचा चुका होता।

हा हा हा

ऊ ऊ ss ऊ ss

तभी राक्षसराज भस्मासुर ने अपनी तलवार अहेना की गर्दन पर टिका दी—

बस! अब यह खेल खत्म। अब हम दूसरा खेल खेलेंगे।

अच्छा दूसरा खेल जल्दी बताओ भाई, कौन सा दूसरा खेल।

COMICS-MAGAZINES-COM
Book Seller-Pandav Nagar-Dlh

सौतानी मुस्कराहट खेल गई दरिंदे के होंठों पर—

अब भोकाल अपनी ही तलवार से अपने अंग काटेगा, और अगर नहीं तो मैं इसबुलबुल की गर्दन काट दूंगा हाहाहा।

चौंक उठे सब, चीख निकल पड़ी उनकी—

नहीं! भोकाल चाचा नहीं! मुझे मर जाने दो। आप इन से अपना बदला लेलो।

ऐसे वीभत्स दिमाग वैसे वीभत्स खेल।

बच्ची के दिल में कितना दर्द था भोकाल के लिए।

तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे भोकाल! जैसा यह दरिन्दा कह रहा है।

मेरे रहते ऐसा कुछ नहीं होगा भोकाल!

भोकाल आगे बढ़ा—

नहीं, मैं इस बच्ची के लिए अपनी जान दे दूंगा। मुझे कोई नहीं रोक सकता।

यह क्या अनर्थ होने जा रहा था—

हा हा हा काटो पहले हाथ, फिर पैर, फिर सिर। हा हा हा

हाहाहा भाई भस्मासुर! तुम्हारा खेल तो बहुत शानदार है।

नहीं चाचा! नहीं ईsssss

आह!

खचाक

पृथ्वी पर हर व्यक्ति सांस रोके यह अनर्थ देख रहा था—

नहीं

मुझे छोड़ दे शैतान, छोड़ दो। मुझे भोकाल को रोकने दो।

नहीं अतिक्रूर! रुक जाओ। वह जो कर रहा है, ठीक कर रहा है।

गजरोला का राजा उड़न खटोला—

ऐसा मत करो भोकाल! तुम्हें कुछ हो गया तो मैं अपनी जान दे दूंगा।

चीचीं का राजा चीचीं।

और विकारनगर में—

महाराज! कुछ कीजिए अगर भोकाल को कुछ हो गया तो हमारी सेना को रक्षा कौन करेगा?

हम तुरीन के खो जाने से पहले ही दुखी हैं प्रिये! हमें और दुखी ना करो।

मुझे और अदिग पीनी पड़ेगी। सारा नशा हिरण हो गया।

हत्यारिन अपनी सभी सीमाएं पार कर चुकी थी-

कालू शाबाश! अब अपना दूसरा पैर भी काट फेंको।

भोकाल ने अपनी दूसरी टांग की भी बलि दे दी-

लो, ऐसे अब काटो अपनी गर्दन।

किन्तु-

अगले ही पल किसी ने राक्षसराज भस्कम को उछाल फेंका-

धड़ाम

धरती से टकराते ही दोनों का सम्मोहन टूटा।

जी हां सम्मोहन। यह सब था ही शुतानके शानदार सम्मोहन का कमाल-

मिली मिली हो गुपा हो हो

जिसकी आड़ में अतिक्रूर ने राक्षसराज भस्कम को धूल चटा दी।

और भोकाल वह तो सही-सलामत खड़ा मुस्करा रहा था-

धन्यवाद शुतान! अब मेरी बारी है इनसे खेलने की। तुम दोनों बच्चों को लेकर पीछे हट जाओ।

धोखा!

टूट पड़ा भोकाल उन नीच हत्यारों पर-

इंसानियत के आगे हैवानियत नहीं टिका करती हत्यारो!

धनुषी

अपने ऊपर हुए एक-एक अन्याय का बदला लेने से रोकने के लिए अब कोई रुकावट भोकाल के सामने नहीं थी।

स्वयंक

आह्ह्ह

आ ऽऽ आ ऽऽ

अभी नहीं। अभी तो तुमसे और भी कुछ काम है।

हाए! भैया बोझ मैं मरा।

फिर भोकाल ने दोनों राक्षसों की टांगें भी काट दीं-

ओ ऽऽऽ ओ ऽऽऽ

जय महागुरु भोकाल!

वाह! लंगड़ा राक्षस। लंगड़ा राक्षस।

दोनों राक्षसों की चीख से गूंज उठा आकाश।

अब—

बोलो! परीलोक की रानी ओसिका, मेरी मां को कहां छिपा रखा है तुमने?

उछल ही तो पड़े दोनों बिनाटांगों के ही।

भयंकर पीड़ा भी जैसे गायब हो गई—

... परीलोक की रानी ओसिका तुम्हारी मां! तुम्हारी...

हां, मेरी मां! नमक हरामजादे कहां है वो?

लगता था आज उसकी मनचाही मुराद मिल ही जाएगी।

कठोर हो चला भोकाल का चेहरा चट्टान की तरह कठोर—

सुनो! यदि अगले क्षण तुम्हारी जुबान नहीं खुली तो मेरी तलवार और एक क्षण भी नहीं रुकेगी।

अब तो उसे बोलना ही था उसका मुंह खुलना ही था—

वो sss ओ sss वह गंगss आss

बशर्ते कि वह मुर्दा ना हो जाता।

और किस्मत को पता नहीं क्यों यही मंजूर था—

धिर् धिर् धिर्

उफ्!

??

एकबार फिर भटक गया भोकाल क्योंकि...

... अब उन दोनों में से कोई भी उसे उसकी मां परीरानी ओसिका के बारे में बताने के लिए जीवित नहीं था—

बोलो! मैं कहता हूं बोलो!

किन्तु मुरदे कहां बोलते हैं!

अगले क्षण पागल नजर आने लगा वह—

मुझे बताओ! कहां है मेरी मां! मुझे अपनी मां के पास जाना है। बोलो बोलो, बताओ!

रो ही तो पड़ा वह ममता का मारा—

मां! तुम कहां हो? बूह हू।

आंखें उनकी भी भीग गईं—

भोकाल चाचा मत रोओ!

मत रो मित्र!

मित्र! यह आखिरी रास्ता था मां तक पहुंचने का और... और वह भी आज समाप्त हो गया।

भोकाल चाचा! मैं भी परीरानी मां को ढूंढूंगी।

धैर्य रखो मित्र! रास्ते और भी बन जाएंगे। तुम हिम्मत ना छोड़ो।

मैं अतिकूर पुत्र कपालफोड़ तुम्हारी मां को ढूंढ़ने में आकाश-पाताल एक कर दूंगा।

सत्य के साथी और...

... सत्य का दुश्मन महाबली फ्रू चांग –

हा हा हा अगर पलो की भी देर हो जाती और राक्षसराज बोझा भोकाल को उसकी मां का पता बता देता तो वह शक्तिया तिलिस्मी ओलम्पाक से भटक जाता!...

... इसलिए उन दोनों को मारना अति आवश्यक हो चला था...

... यह खेल मुझसे बाहर नहीं जा सकता। जैसे मैं चाहूंगा वह कठपुतलियां खेलेंगी। हा हा हा।

... किन्तु यह तुरीन कहां गई? उसे भी तो ढूंढना पड़ेगा।

और तभी–

वाह! यह रही वो। यह तो तिलिस्म के अंदर घुस गई है। वाह!

समाप्त

राज कॉमिक्स में

एहस्य रोमांच मनोरंजन से भरपूर भोकाल सीरीज की

तीन शानदार चित्रकथाएं

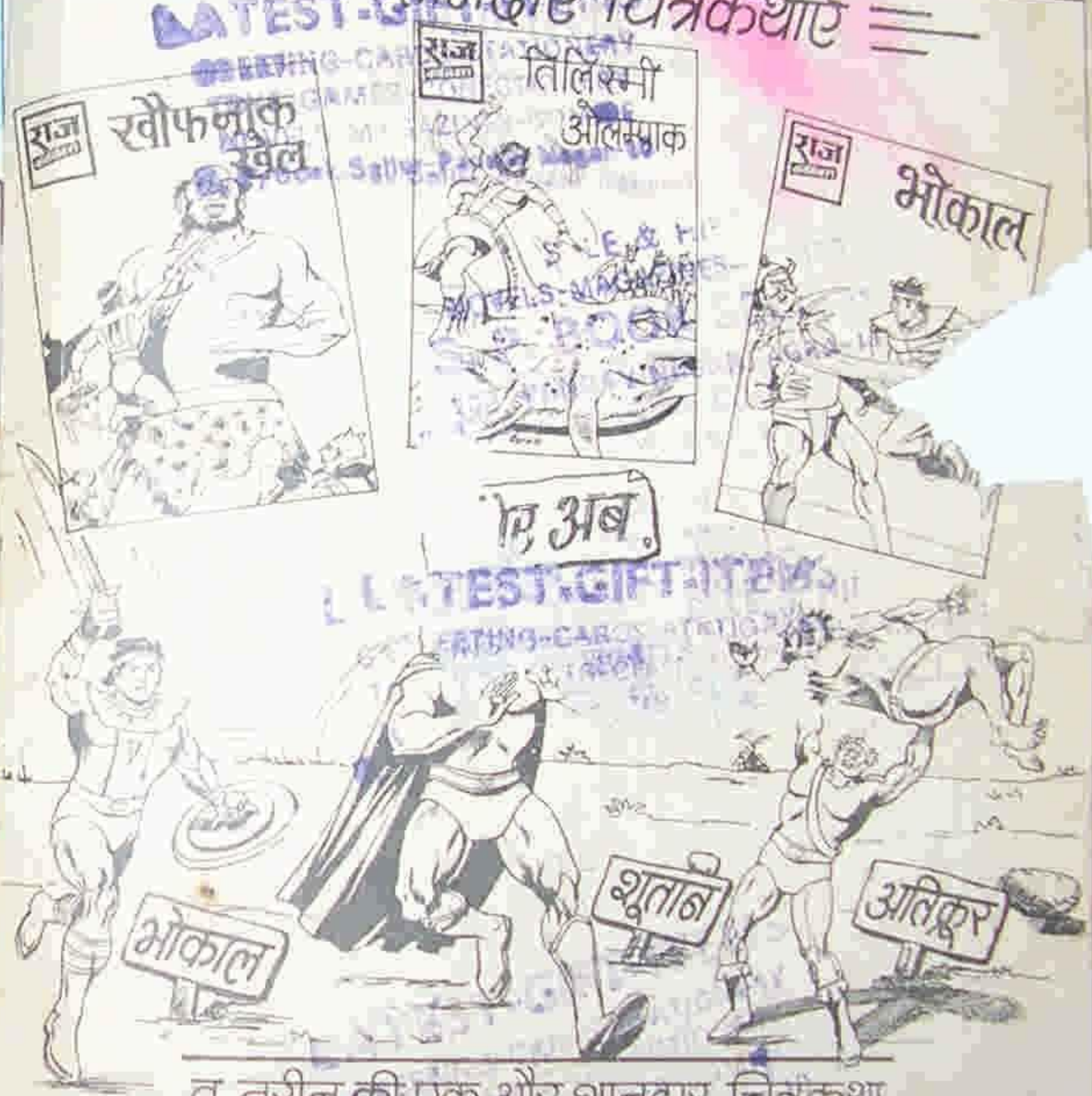

व तुरीन की एक और शानदार चित्रकथा

शूतान